"दिया गयी बस दिया गयी
हमको जो सीख सिखानी थी!
मुर्दो मे भी जान डाल दे
ऐसी उनकी कहानी थी,
बस की वो और कोई नही
'झाँसी' वाली रानी थी!"

नमस्कार.......

'मेरा नाम कु. समिक्षा सिद्धार्थ दारोकार' 'कक्षा 12 वी' "स्व. बाबासाहेब धोटरे विद्यालय व कनिष्ठ महाविद्यालय सिरसोली" इस स्कूल की स्टुडेंन्ट मेरा विषय "लक्ष्मी बाई मेरे सपने मे आयी थी की मे देश की सेवा करु"

सपनो के दायरो की कोई सीमा नही होती है।
इन दिनो अपने स्कूल के प्रतियोगितो मे भाग लेने के दौरान मैने 'रानी लक्ष्मी बाई' की भुमिका निभायी। इस के लिए मैने उनका जिवन पढा, तथा वे मेरे दिलो दिमाग पर इस कदर छाया रहा। की एक रात मेरे सपने मै साक्षात रानी लक्ष्मी बाई प्रकट हुयी। और उन्होने मुझे अपने देश की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। और मुझे अपनी सेना मे भरती होकर अपने भारत एवं राष्ट्र पर, पोशित आदर्श की रक्षा करने का आग्रह किया।
यह सपना मेरे जिवन के लिए प्रेरित आवली बन गया।
मुझे एहसास हुआ की ये संदेश केवल एक सपना नही था। बल्की मेरे भारत की रक्षा और प्रकृती के लिए खुद को समर्पित करने का आवाहन था!

रानी लक्ष्मी बाई' तरह मेरा भी लक्ष मेरे भारत के सेवा के
लिये मेरा कौशल, जुनून, व दृढ़ संकल्प को आधार बनाकर जुट
जाता है। हम-मेसे हर व्यक्ती चाहे वो किसी उम्र का हो अपने
क्षमता के अनुसार अपने भारत की सेवा कर सकता है।
एक सकारात्मक बदलाव के दिशा की और छोटे - छोटे कदम
गाथा पौथ प्रभाव डालते है।
इस उल्लेखनिय इतिहास की दरी ने मेरे भितर हलचल सी पैदा
कर दी, ऐसा लगा की मानो 'रानी लक्ष्मी बाई ने राष्ट्र सेवा
के विरासत को आगे बढ़ाने के लिये मुझे चुना हो। उनकी पुकार
मेरे मन मे गुंज उठी जिससे मेरे मन मैं कर्तव्य और प्रतिबद्धता
जैसे भावना जागृत हुयी, उनके सपने के माध्यम से मुझे अपनी
अपने देश की सेवा करने का एक स्पष्ट दृष्टीकोण मिला, उनकी
वीरता, साहस, बुद्धिमता समर्पण जैसे उनके गुण तो मुझे हमेशा
आकर्षित करते आये है। उन्होने मुझे अपनी सच्ची खुशी पाने का
रास्ता दिखाया। मुझे वो खुशी अपने देश की सेवा करने मे मिल
सकती है। इसी लिये मैंने अपने सपने साकार करने व उनके
शब्दो को निभाने का फैसला किया।
मैं दोबारा ये कहना चाहुंगी की यह सपना जिसमे 'रानी लक्ष्मी बाई' ने
मुझे अपने देश की रक्षा करने के लिये प्रेरित किया वह क्षण मेरे
लिये निर्णायक क्षण बन गया। और उनकी उनकी देश-भक्ती और
बहादूरी की विरासत मेरे लिये मार्ग-दर्शक बन गयी।
जिसे मैं कभी भी नजर अंदाज नही कर सकती, मैं अपने
वक्तव्य का समर्पण देश के बेटीयो के लिए कुछ कहते
हुए चाहुंगी।

अपने हौसलो की एक
कहानी बनाना,
हो सके तो खुद को,
झाँसी की रानी बनाना।

कभी कभी छोटी छोटी बातो पर गौर करने से पुर्ण दृष्टीकोन
मे बदलाव आ जाता है। जैसे की मेरे एक स्वप्न ने मेरे व्यक्ती
त्व को बदल दिया मै अर्ध रात्री मे अचानक से उठ गयी, शरिर
के रोमटे खडे हो गये थे। पुर्ण शरिर पसिनेसे तर था तभी मुझे
अचानक से मेरा सपना याद आ गया। मैं सुनसान रणभूमी पे खडी
थी अचानक से दुर से घोडे की आवाज सुनायी दी, एक परछायी
का आभास हुआ, उसके पास पोहचने पर एक स्त्री दिखी जो
कुशल योद्धा सी प्रतित हो रही थी, नैनो मे देहक्ती अग्नी, हातो मे
लहू लोहान तलवार, चेहरे पर तेज, और पिठ पर उनका पुत्र, हा
मेरे स्वप्न मे 'रानी लक्ष्मी बाई' आयी थी।
वही विरांगना जो शत्रुसे नजरे झुकाकर नही, नजरे मिलाकर
बात करती थी। वही विरांगना जिनकी विरगाथा प्रसिद्ध है
और जिनका स्वाभिमान अमर है....
उनके आचरण, उनके तेज को देख मेरा हृदय दहल उठा।
वह मेरे पास आकर बोली, जिस देश के भविष्य के लिये
जाने कितने स्वतंत्रता सैनिको ने बलिदान दिये।
उस देश का युवा ही गलत पथ पर अग्रसर है। उनके शब्दो ने
मुझे सोचने पर विविश कर दिया, उनके अनुसार देश का भविष्य
युवा पिढी के हाता हाथो मे है, उनका मानना है की बदलाव
का प्रथम चरण प्रत्येक युवा से होगा। वह यह बोली की पुरा
विश्व युवाओं पर निर्भर है।

युवा प्रातःकाल के उगते सूर्य के समान है।
जो अपने प्रकाश से हर अंधेकार को मिटाने के लिए सक्षम है।
उनके वचनोंने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया।।

"क्या आज का युवा अपना
इतिहास भूलता जा रहा है?"
'क्या सभी स्वातंत्र्यता सैनिको के
बलिदान व्यर्थ गए?

वो शायद मेरे मन की उलझन समझ गयी थी। वो प्रेम से मुस्कुराते हुए बोली, इतनी असमंजस मे ना पड़ो तुम्हे देश के विकास मे योगदान करना होगा। उन्होंने मुझे कुछ कार्य बताये, जिससे मै सभी देश के विकास मे योगदान कर सकती हूँ!

पहला :- 1) पर्यावरण की रक्षा जिससे हमारी आनेवाले पिढी को स्वच्छ पर्यावरण के साथ साथ पर्यावरण संरक्षण की सिख भी मिलेगी!

दूसरा :- 2) अन्याय को नजर अंदाज करने के जगा उसके खिलाफ आवाज उठाकर सत्य का साथ देना जिससे देश मे भ्रष्टाचार कम होगा।!

तीसरा :- 3) समय व्यर्थ ना करना क्युकी वक्त सभी को मिलता है, जिंदगी बदलने के लिए। पर जिंदगी दोबारा नही मिलती वक्त बदलने के लिए!

चौथा :- 4) एक अच्छा नागरिक बनने के कोशिश मे सभी नियम कानुन का पालन करना और एक अच्छी व्यक्तीत्व का निर्माण करना।

पाचवा :- 5) मेरी शिक्षा ही मेरा सबसे बड़ा हथियार है, अथा शिक्षा से समाज को बदलने की अथक प्रयास करो!

उनके सुजाव मेरे हृदय को छु गये मुझे इस बात का आभास हो गया था। सभी लोग अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करे, तो हमारे देश का विकास कोई नही रोक सकता! अगर अपने देश को सफल के शिखरता तक पोहचाना है; तो हमे सर्व प्रथम खुदपर बदलाव लाने होंगे, क्युकी प्रत्येक बदलाव के साथ हम अपनी मंजील के और अनुशासित होते जायेंगे। "रानी लक्ष्मीबाई" के द्वारा मुझमे जिस उर्जा का संचार हुआ वो सुख्यत मैं उससे उनसे इतनी प्रभावित हो गयी की मैंने प्रण ले लिया...

मैं ये प्रण लेती हूँ की अपने देश के विकास मे योगदान के हर-संभव प्रयास करूंगी मैं "विरांगना लक्ष्मी बाई को" अपना गुरु चुनकर उनके बताये गये पत पर आने के लिए प्रेरित करूंगी रानी लक्ष्मी बाई के मुँह पे चेहरे पे मुस्कान आयी जिससे उनकी प्रसन्नता साफ सलक रही थी। उनके शब्द मेरे कानों मे गुंज रहे थे, मुझे तुम पर गर्व है, मुझे तुम पर गर्व है! स्वप्न मे उस विरांगना के दर्शन पाकर मै तो धन्न हो गयी, परंतु अ उनके द्वारा प्रेरणा पाकर मेरा जिवन सफल हो गया। अंतःता मे केवल यह सांझा करना चाहुंगी की हमे अपने देश के विकास मे बदचलकर उनका विकास करना चाहिए। केवल संपुर्ण योगदान करके ही हम अपने स्वातंत्र्य सैनिको को का कर्ज उतार सकते है!

विर-गाथा ओ की महाराणी
अतुल्य साहसी बलीदानी थी,
रण मैं धूल चटायी सबको
वो तो झांसी वाली रानी थी!

धन्यवाद .....

AnyScanner